नृत्य का परिचय
(INTRODUCTION TO DANCE)

ललित कलाओं में संगीत कला सर्वश्रेष्ठ है। भारतीय संगीत के अन्तर्गत गीत को प्रधान और वाद्य व नृत्य का कार्य गीत का उपरंजन करते हुए सम्यक बनाना है। गायन, वादन, नृत्य के माध्यम से जनजीवन की प्रसन्नता की अभिव्यक्ति होती है। भारतीय नृत्यकला अत्यन्त प्राचीन है।

नृत्य का इतिहास
(HISTORY TO DANCE)

जब चेष्टाओं द्वारा हृदय की अनुभूतियाँ व्यक्त होती हैं तो उन्हें मुद्राओं और अंगहारों का नाम दिया जाता है, नृत्य की सृष्टि इसी प्रकार हुई है। नृत्य कला किसी भी स्थान की लोक संस्कृति, साहित्य व धर्म को समन्वित रूप से प्रस्तुत करती है। प्राचीन काल में नृत्यों की वैभवशाली परम्परा रही है। वैदिक समाज में नृत्य को यज्ञ का इष्ट माना जाता था। भारत में सदा से ही नृत्य और धर्म का अटूट सम्बन्ध रहा है। इसीलिए धर्म ग्रन्थों में भगवान शिव के तांडव नृत्य, भगवती पार्वती के लास्य नृत्य, श्रीकृष्ण के नटवरी नृत्य व भगवान विष्णु के मोहनी नृत्य का उल्लेख मिलता है।

भारत में नृत्यों का विकास ईसा से ढाई हजार वर्ष पूर्व ही उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचने के प्रमाण मिलते हैं। भरत मुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में नृत्यकला विस्तार से प्रस्तुत किया है जिससे आभास होता है कि नृत्यकला शास्त्रबद्ध होने से पूर्व ही व्यापक और विकसित हो चुकी थी। भारत के अलग-अलग प्रांतों में शास्त्रीय आधार पर जिन तत्वों को ग्रहण किया गया, उनमें शास्त्रीयता के साथ-साथ लोक तत्वों का भी मिश्रण हुआ।

ब्रह्मा ने जब सृष्टि की रचना की, तभी से नृत्य मानव जीवन से जुड़ा हुआ है। नृत्य मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मनुष्य के नृत्य से उसकी आन्तरिक भावनाएँ प्रस्फुटित होती हैं। तांडव नृत्य पुरुष प्रधान और लास्य नृत्य स्त्री प्रधान है। शास्त्रीयता के साथ-साथ लोक तत्वों के मिश्रण से भरतनाट्य, ओडिसी, मोहिनी अट्टम, कथकली, मणिपुरी और कथक आदि का विकास हुआ।

Scanned with CamScanner

लोकनृत्य
(LOCK-NRATYA)

लोकानुरंजक कथावस्तु की नृत्य के माध्यम से प्रस्तुति ही लोकनृत्य है। सामान्य लोकजीवन, प्रचलित विश्वास, आस्था और परम्परा लोकनृत्य के आधार होते हैं। भारतीय लोकनृत्यों में भाव-भंगिमाएँ, लय ताल, मुद्राएँ एवं क्रियाएँ लोक नर्तकों के पद और अंग-संचालन द्वारा संचालित होकर असीम आनन्द की लहरों की उत्पत्ति करते हैं। भारत के ग्राम्य जीवन में लोकनृत्य की समृद्ध परम्परा है। लोकनृत्यों में लोकगीतों का विशेषण आकर्षण होता है। भारतीय लोकनृत्यों में भौगोलिक-सांस्कृतिक विविधता के आधार पर रहन-सहन, रीति-रिवाज, पर्व त्यौहार, संस्कार, पूजा-अर्चना, देवी-देवताओं, मौसम, आखेट, श्रम, शृंगार आदि की झलक मिलती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों के कुछ ख्याति प्राप्त लोकनृत्यों का विवरण निम्न सारणी में प्रस्तुत किया जा रहा है—

प्रान्त	लोकनृत्य का नाम	लोकनृत्य का अवसर	नृत्य करने वाले लोग एवं जाति	नृत्य का सरोकार
अरुणाचल	1. रोप्पी	वीर पुरुष का अभिनन्दन	पुरुष, पहाड़ों में रहने वाले	प्रचलित सामाजिक प्रथा; शत्रु या भयंकर खूंखार जानवरों का शिकार करने वाले का अभिनन्दन
	2. पेन	फसल कटाई	पुरुष	देवताओं का आभार व्यक्त
	3. खीरबो	बसन्तोत्सव	पुरुष	एक-दूसरे को शुभकामना
	4. सावाचाम	—	पुरुष	किवदन्ती: एक हिरन ने बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लोग लाभान्वित हुए।
	5. खाम्पटी		पुरुष	किवदन्ती: देवताओं से पराजित होकर पशुओं ने हिंसक प्रवृत्ति छोड़ दी और वे पालतू पशु बन गए।

Scanned with CamScanner